पाठ–1 कक्षा–10 (संचयन–2)

टोपी शुक्ला

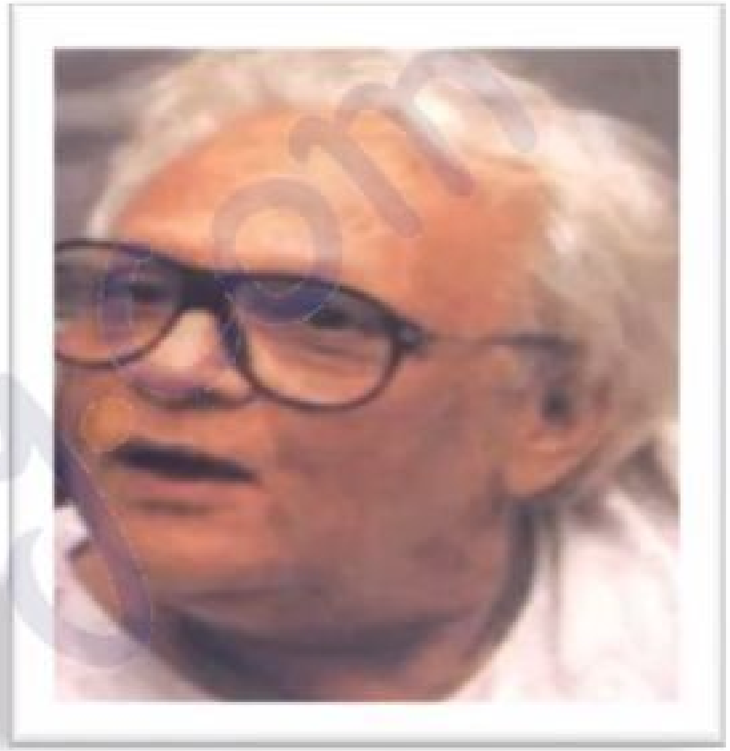

लेखक: राही मासूम रजा

जन्म: 1 सितबंर 1927

मृत्यु: 15 मार्च 1992

स्थान: गाजिपुर जिले के गंगौली गाँव (उत्तर–प्रदेश)

DronStudy.com

SuccessCDs

जीवन परिचय

राही मासूम रज़ा (1 सितंबर, 1927 – 15 मार्च 1992) का जन्म गाजीपुर जिले के गंगौली गाँव में हुआ था और प्रारंभिक शिक्षा–दीक्षा गंगा किनारे गाजीपुर शहर के एक मुहल्ले में हुई थी।

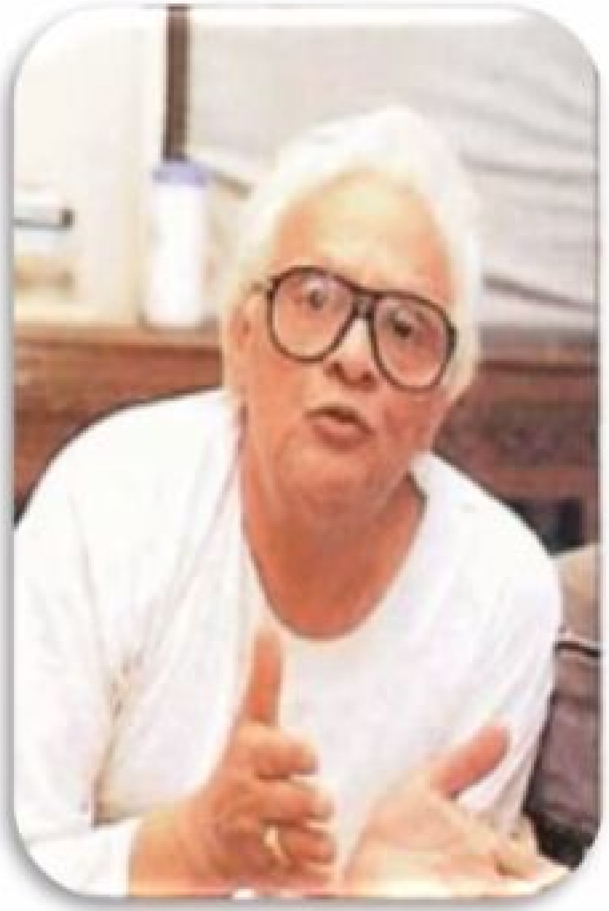

DronStudy.com

SuccessCDs

अपने व्यक्तित्व के इस निर्माण–काल में वे बड़े ही उत्साह से साम्यवादी सिद्धान्तों के द्वारा समाज के पिछड़ेपन को दूर करना चाहते थे और इसके लिए वे सक्रिय प्रयत्न भी करते रहे थे।

DronStudy.com

SuccessCDs

वे अपनी साहित्यिक गातिविधियों के साथ–साथ फिल्मों के लिए भी लिखते थे जो उनकी जीविका का प्रश्न बन गया था। राही स्पष्टतावादी व्यक्ति थे और अपने धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रीय दृष्टिकोण के कारण अत्यन्त लोकप्रिय हो गए थे।

DronStudy.com

SuccessCDs

रचनाएँ

इनके उपन्यास हैं – आधा गाँव, दिल एक सादा कागज़, ओस की बूंद, हिम्मत जौनपुरी, कटरा बी आर्ज़ु, टोपी शुक्ला, सीन।

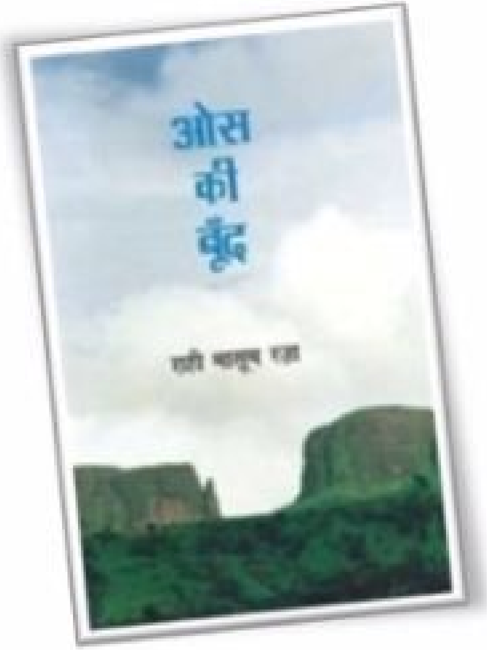

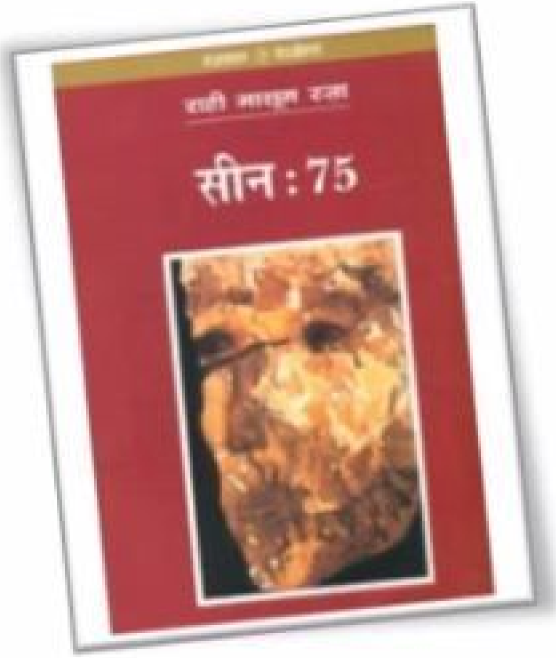

DronStudy.com

SuccessCDs

इनकी जीवनी – छोटे आदमी की बड़ी कहानी। उनकी ये सभी कृतियाँ हिन्दी में थी।

DronStudy.com

SuccessCDs

'टोपी शुक्ला' कहानी के लेखक 'राही मासूम रजा' हैं इस काहनी के माध्यम से लेखक बचपन की बात करता है। बचपन में बच्चे को जहाँ से अपनापन और प्यार मिलता है वह वहीं रहना चाहता है।

DronStudy.com

SuccessCDs

'टोपी शुक्ला'

इफ़्फन के बारे में कुछ जान लेना इसलिए ज़रूरी है कि इफ़्फन टोपी का पहला दोस्त था। इस इफ़्फन को टोपी ने सदा इफ़्फन कहा। इफ़्फन ने इसका बुरा माना। परंतु वह इफ़्फन पुकारने पर बोलता रहा। इसी बोलते रहने में उसकी बड़ाई थी।

DronStudy.com

SuccessCDs

यह नामों का चक्कर भी अजीब होता है। उर्दू और हिंदी एक ही भाषा, हिंदवी के दो नाम हैं। परंतु आप खुद देख लीजिए कि नाम बदल जाने से कैसे–कैसे घपले हो रहे हैं। नाम कृष्ण हो तो उसे अवतार कहते हैं और मुहम्मद हो तो पैगंबर।

DronStudy.com

SuccessCDs

नामों के चक्कर में पड़कर लोग यह भूल गए कि दोनों ही दूध, देने वाले जानवर चराया करते थे। दोनों ही पशुपति, गोबरधन और ब्रज–कुमार थे। इसीलिए तो कहता हूँ कि टोपी के बिना इफ़्फ़न और इफ़्फ़न के बिना टोपी न केवल यह कि अधूरे हैं बल्कि बेमानी हैं। इसलिए इफ़्फ़न के घर चलना ज़रूरी है।

DronStudy.com

SuccessCDs

यह देखना ज़रूरी है कि उसकी आत्मा के आँगन में कैसी हवाएँ चल रही हैं और परंपराओं (प्रथा/प्रणाली जो बहुत दिनों से चली आ रही हो) के पेड़ पर कैसे फल आ रहे हैं।

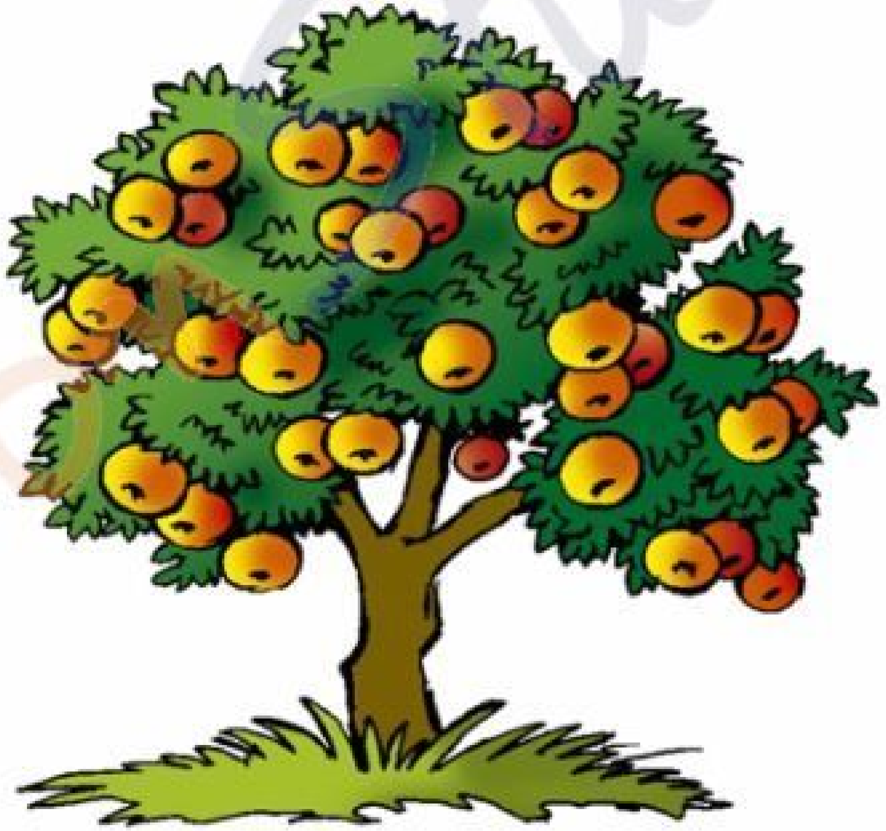

DronStudy.com

SuccessCDs

भाग (2)

इफ़्फ़न की कहानी भी बहुत लंबी है। परंतु हम लोग टोपी की कहानी कह–सुन रहे हैं। इसीलिए मैं इफ़्फ़न की पूरी कहानी नहीं सुनाऊँगा बल्कि केवल उतनी ही सुनाऊँगा जितनी टोपी की कहानी के लिए ज़रूरी है।

DronStudy.com

SuccessCDs

मैंने इसे जरूरी जाना कि इफ़्फ़न के बारे में आपको कुछ बता दूँ क्योंकि इफ़्फ़न आपको इस कहानी में जगह–जगह दिखाई देगा। न टोपी इफ़्फ़न की परछाई है और न इफ़्फ़न टोपी की। ये दोनों दो आज़ाद व्यक्ति हैं। इन दोनों व्यक्तियों का डेवलपमेंट (विकास) एक–दूसरे से आज़ाद तौर पर हुआ।

DronStudy.com

SuccessCDs

इन दोनों को दो तरह की घरेलू परंपराएँ मिलीं। इन दोनों ने जीवन के बारे में अलग–अलग सोचा। फिर भी इफ़्फ़न टोपी की कहानी का एक अटूट (न टूटने वाला) हिस्सा है। यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण है कि इफ़्फ़न टोपी की कहानी का एक अटूट हिस्सा है।

DronStudy.com

SuccessCDs

मैं हिंदू–मुस्लिम भाई–भाई की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं यह बेवकूफी क्यों करूँ! क्या मैं रोज़ अपने बड़े या छोटे भाई से यह कहता हूँ कि हम दोनों भाई–भाई हैं? यदि मैं नहीं कहता तो क्या आप कहते है? हिंदू–मुसलमान अगर भाई–भाई हैं तो कहने की ज़रूरत नहीं।

DronStudy.com

SuccessCDs

यदि नहीं हैं तो कहने से क्या फर्क पड़ेगा। मुझे कोई चुनाव तो लड़ना नहीं है।

मैं तो एक कथाकार हूँ और एक कथा सुना रहा हूँ। मैं टोपी और इफ़्फन की बात कर रहा हूँ।

DronStudy.com

SuccessCDs

ये इस कहानी के दो चरित्र हैं। एक का नाम बलभद्र नारायण शुक्ला है और दूसरे का नाम सय्यद जरगाम मुरतुज़ा। एक को टोपी कहा गया और दूसरे को इफ़्फन।

DronStudy.com

SuccessCDs

इफ़्फन के दादा और परदादा बहुत प्रसिद्ध मौलवी थे। काफिरों के देश में पैदा हुए। काफिरों के देश में मरे। परंतु वसीयत (मृत्यु के बाद अपनी संपत्ति के प्रबंध) करके मरे कि लाश करबला (इस्लाम का एक पवित्र स्थान) ले जाई जाए। उनकी आत्मा ने इस देश में एक साँस तक न ली।

DronStudy.com

SuccessCDs

उस खानदान में जो पहला हिंदुस्तानी बच्चा पैदा हुआ वह बढ़कर इफ़्फन का बाप हुआ।

जब इफ़्फन के पिता सय्यद मुरतुजा हुसैन मरे तो उन्होंने यह वसीयत नहीं की कि उनकी लाश करबला (इस्लाम) ले जाई जाए। वह एक हिंदुस्तानी कब्रिस्तान में दफन किए गए।

DronStudy.com

SuccessCDs

इफ़्फन की परदादी भी बड़ी नमाजी (नियमित रूप से नमाज़ पढ़ने वाला) बीबी थीं। करबला, नजफ, खुरासान, काजमैन और जाने कहाँ की यात्रा कर आई थीं। परंतु जब कोई घर से जाने लगता तो वह दरवाजे पर पानी का एक घड़ा ज़रूर रखवातीं और माश का सदका (एक टोटका) भी जरूर उतरवातीं।

DronStudy.com

SuccessCDs

इफ़्फन की दादी भी नमाज़–रोज़े की पाबंद थीं परंतु जब इकलौते बेटे को चेचक (एक संक्रामक रोग) निकली तो वह चारपाई के पास एक टाँग पर खड़ी हुईं और बोलीं, "माता मोरे बच्चे को माफ करद्यो।" पूरब की रहने वाली थीं। नौ या दस बरस की थीं जब ब्याह कर लखनऊ आईं, परंतु जब तक ज़िंदा रहीं पूरबी (पूरब की तरफ बोली जाने वाली भाषा) बोलती रहीं।

DronStudy.com

SuccessCDs

लखनऊ की उर्दू ससुराली थी। वह तो मायके की भाषा को गले लगाए रहीं क्योंकि इस भाषा के सिवा इधर–उधर कोई ऐसा नहीं था जो उनके दिल की बात समझता।

DronStudy.com

SuccessCDs

जब बेटे की शादी के दिन आए तो गाने–बजाने के लिए उनका दिल फड़का परंतु मौलवी के घर गाना–बजाना भला कैसे हो सकता था! बेचारी दिल मसोसकर रह गईं हाँ इफ़्फ़न की छठी... (जन्म के छठे दिन का स्नान) पर उन्होंने जी भरकर जश्न (उत्सव) मना लिया।

DronStudy.com

SuccessCDs

बात यह थी कि इफ़्फन अपने दादा के मरने के बाद पैदा हुआ था। मर्दों और औरतों के इस फर्क को ध्यान में रखना ज़रूरी है क्योंकि इस बात को ध्यान में रखे बगैर इफ़्फन की आत्मा का नाक–नक्शा (रूप–रंग) समझ में नहीं आ सकता।

DronStudy.com

SuccessCDs

इफ़्फन की दादी किसी मौलवी की बेटी नहीं थीं बल्कि एक ज़मींदार की बेटी थीं। दूध–घी खाती हुई आई थीं परंतु लखनऊ आकर वह उस दही के लिए तरस गईं जो घी पिलाई हुई काली हाँडियों में असामियों के यहाँ से आया करता था। बस मायके जातीं तो लपड़–शपड़ जी भर के खा लेतीं।

DronStudy.com

SuccessCDs

लखनऊ आते ही उन्हें फिर मौलविन बन जाना पड़ता। अपने मियाँ से उन्हें यही तो एक शिकायत थी कि वक्त देखें न मौका, बस मौलवी ही बने रहते हैं।

DronStudy.com

SuccessCDs

ससुराल में उनकी आत्मा सदा बेचैन रही। जब मरने लगीं तो बेटे ने पूछा कि लाश करबला जाएगी या नजफ, तो बिगड़ गईं। बोलीं, ''ए बेटा जउन तूँ से हमरी लाश ना सँभाली जाए त हमरे घर भेज दिहो।''

DronStudy.com

SuccessCDs

मौत सिर पर थी इसलिए उन्हें यह याद नहीं रह गया कि अब घर कहाँ है। घरवाले कराची में हैं और घर कस्टोडियन (जिस संपत्ति पर किसी का मालिकाना हक न हो उसका संरक्षण करने वाला विभाग) का हो चुका है। मरते वक्त किसी को ऐसी छोटी–छोटी बातें भला कैसे याद रह सकती हैं।

DronStudy.com

SuccessCDs

उस वक्त तो मनुष्य अपने सबसे ज़्यादा खूबसूरत सपने देखता है (यह कथाकार का खयाल है, क्योंकि वह अभी तक मरा नहीं है) इफ़्फन की दादी को भी अपना घर याद आया। उस घर का नाम कच्ची हवेली था।

DronStudy.com
SuccessCDs

कच्ची इसलिए कि वह मिट्टी की बनी थी। उन्हें दसहरी आम का वह बीजू पेड़ (आम की गुठली से उगाया गया आम का पेड़) याद आया जो उन्होंने अपने हाथ से लगाया था और जो उन्हीं की तरह बूढ़ा हो चुका था।

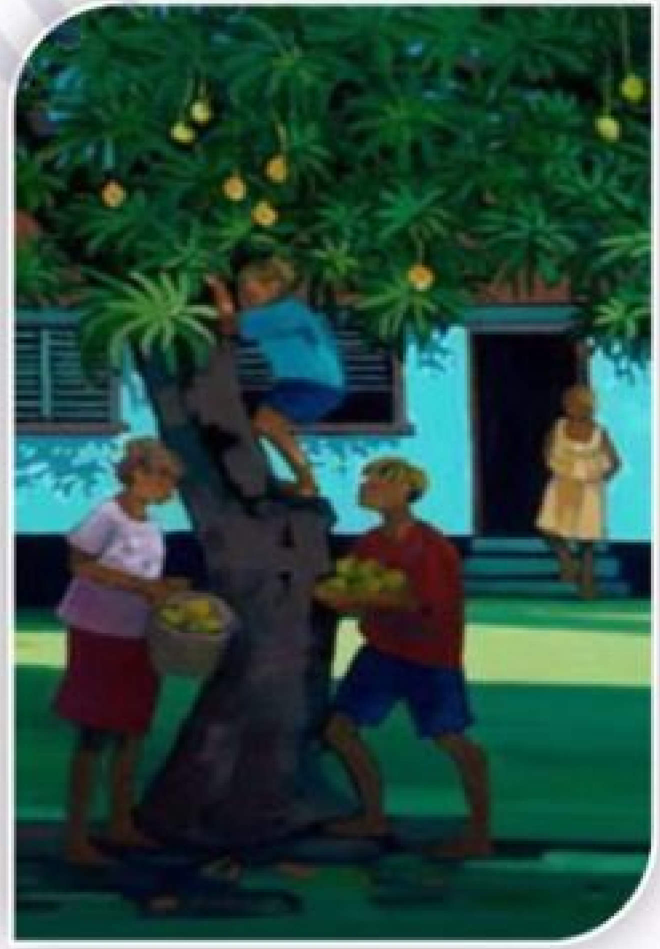

DronStudy.com

SuccessCDs

ऐसी ही छोटी–छोटी और मीठी–मीठी बेशुमार (बहुत सारी) चीज़ें याद आईं। वह इन चीज़ों को छोड़कर भला करबला या नजफ कैसे जा सकती थीं!

DronStudy.com

SuccessCDs

वह बनारस के 'फातमैन' में दफन की गई क्योंकि मुरतुज़ा हुसैन की पोस्टिंग उन दिनों वहीं थी। इफ़्फन स्कूल गया हुआ था। नौकर ने आकर खबर दी कि बीबी का देहांत हो गया। इफ़्फन की दादी बीबी कही जाती थीं।

DronStudy.com

SuccessCDs

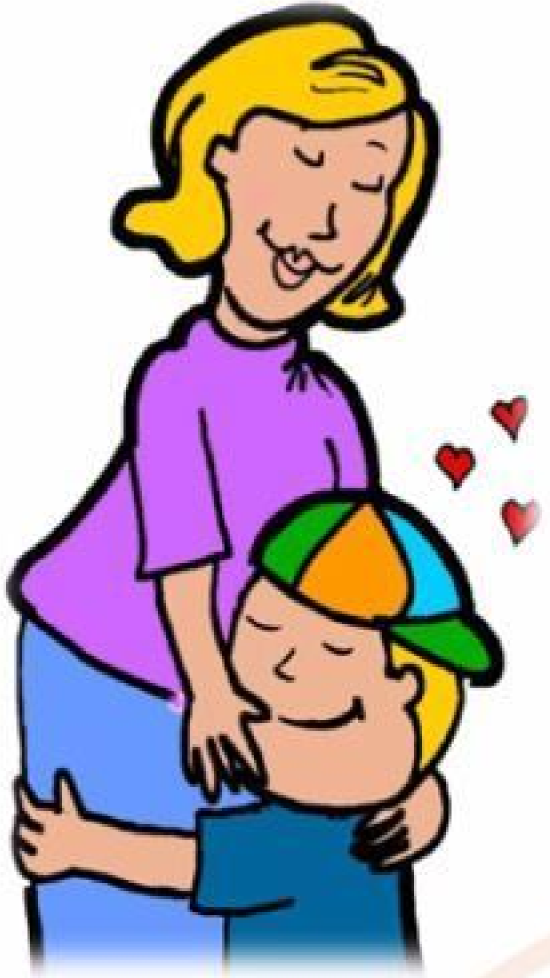

इफ़्फन तब चौथे में पढ़ता था और टोपी से उसकी मुलाकात हो चुकी थी।

इफ़्फन को अपनी दादी से बड़ा प्यार था। प्यार तो उसे अपने अब्बू, अपनी अम्मी, अपनी बाजी (बड़ी बहन) और छोटी बहन नुज़हत से भी था परंतु दादी से वह ज़रा ज़्यादा प्यार किया करता था।

DronStudy.com

SuccessCDs

अम्मी तो कभी–कभार डाँट मार लिया करती थीं। बाजी का भी यही हाल था। अब्बू भी कभी–कभार घर को कचहरी (न्यायालय) समझकर फैसला सुनाने लगते थे। नुज़हत को जब मौका मिलता उसकी कापियों पर तसवीरें बनाने लगती थीं।

DronStudy.com

SuccessCDs

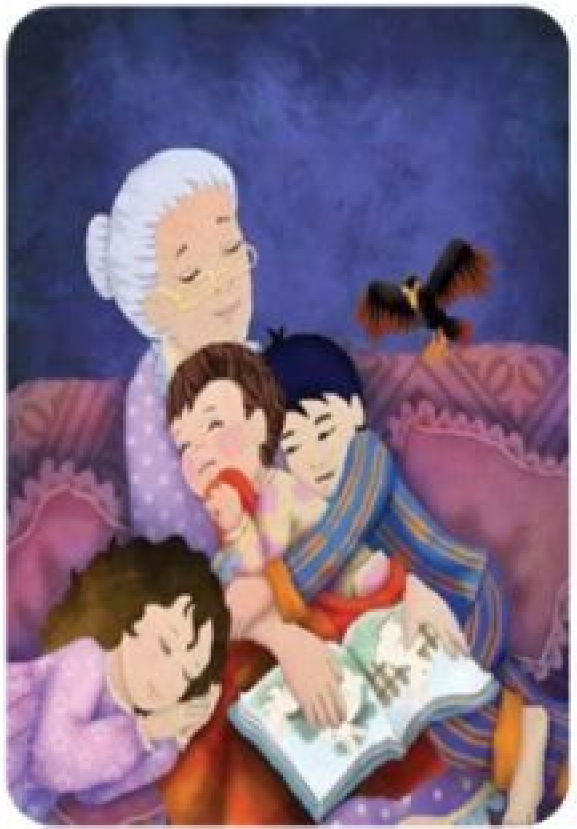

बस एक दादी थी जिन्होंने कभी उसका दिल नहीं दुखाया। वह रात को भी उसे बहराम डाकू, अनार परी, बारह बुर्ज, अमीर हमज़ा, गुलबकावली, हातिमताई, पंच फुल्ला रानी की कहानियाँ सुनाया करती थीं।

DronStudy.com

SuccessCDs

''सोता है संसार जागता है पाक (पवित्र) परवरदिगार। आँखों की देखी नहीं कहती। कानों की सुनी कहती हूँ कि एक मुलुक (देश) में एक बादशाह रहा....''

DronStudy.com

SuccessCDs

दादी की भाषा पर वह कभी नहीं मुसकराया। उसे तो अच्छी–भली लगती थी। परंतु अब्बू नहीं बोलने देते थे। और जब वह दादी से इसकी शिकायत करता तो वह हँस पड़तीं, ''अ मोरा का है बेटा! अनपढ़ गँवारन की बोली तूँ काहे को बोले लग्यो।

DronStudy.com

SuccessCDs

तूँ अपने अब्बा ही की बोली बोलौ।''
बात खत्म हो जाती और कहानी शुरू हो जाती–

''त ऊ बादशा का किहिस कि तुरंते ऐक ठो हिरन मार लिआवा...।''

यही बोली टोपी के दिल में उतर गई थी।

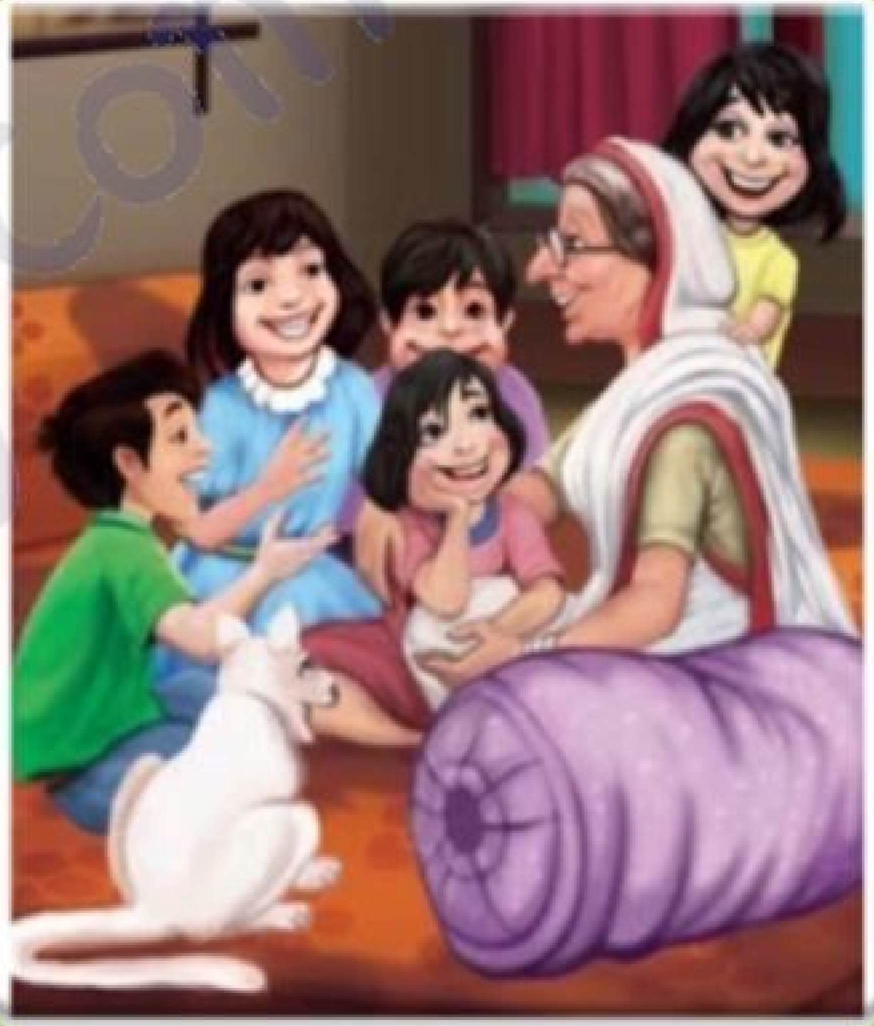

DronStudy.com

SuccessCDs

इफ़्फ़न की दादी उसे अपनी माँ की पार्टी की दिखाई दीं। अपनी दादी से तो उसे नफरत थी, नफरत। जाने कैसी भाषा बोलती थीं। इफ़्फ़न के अब्बू और उसकी भाषा एक थी।

DronStudy.com

SuccessCDs

वह जब इफ़्फ़न के घर जाता तो उसकी दादी ही के पास बठैने की कोशिश करता। इफ़्फ़न की अम्मी और बाजी से वह बातचीत करने की कभी कोशिश ही न करता। वे दोनों अलबत्ता (बल्कि) उसकी बोली पर हँसने के लिए उसे छेड़तीं परंतु जब बात बढ़ने लगती तो दादी बीच–बचाव करवा देतीं–

DronStudy.com

SuccessCDs

''तैं काहे को जाथै उन सभन के पास मुँह पिटावे को झाड़ू मारे। चल इधिर आ...'' वह डाँटकर कहतीं। परंतु हर शब्द शक्कर का खिलौना बन जाता। अमावट (पके आम के रस को सुखाकर बनाई गई मोटी परत) बन जाता। तिलवा (तिल का लड्डू) बन जाता... और वह चुपचाप उनके पास चला जाता।

DronStudy.com

SuccessCDs

‘‘तोरी अम्माँ का कर रहीं...’’ दादी हमेशा यहीं से बात शुरू करतीं। पहले तो वह चकरा जाता कि यह अम्माँ क्या होता है। फिर वह समझ गया कि माता जी को कहते हैं।

यह शब्द उसे अच्छा लगा। अम्माँ। वह इस शब्द को गुड़ की डली की तरह चुभलाता रहा। अम्माँ। अब्बू। बाजी।

फिर एक दिन ग़ज़ब हो गया।

DronStudy.com

SuccessCDs

डॉक्टर भृगु नारायण शुक्ला नीले तेल वाले के घर में भी बीसवीं सदी प्रवेश कर चुकी थी। यानी खाना मेज़–कुरसी पर होता था। लगती तो थालियाँ ही थीं परंतु चौके पर नहीं।

DronStudy.com

SuccessCDs

उस दिन ऐसा हुआ कि बैंगन का भुरता उसे ज़रा ज़्यादा अच्छा लगा। रामदुलारी खाना परोस रही थी। टोपी ने कहा–

''अम्मी, ज़रा बैगन का भुरता।''

अम्मी!

मेज़ पर जितने हाथ थे रूक गए।

DronStudy.com

SuccessCDs

''लफ़्ज़?'' टोपी ने आँखें नचाईं। ''लफ़्ज़ का होता है माँ?''

''ये अम्मी कहना तुमको किसने सिखाया है?'' दादी गरज़ीं।

''ई हम इफ़्फ़न से सीखा है।''

''उसका पूरा नाम क्या है?''

''ई हम ना जानते।''

DronStudy.com

SuccessCDs

''तैं कउनो मियाँ के लड़का से दोस्ती कर लिहले बाय का रे?''

रामदुलारी की आत्मा गनगना गई।

''बहू, तुमसे कितनी बार कहूँ कि मेरे सामने गँवारों की यह ज़बान न बोला करो।'' सुभद्रादेवी रामदुलारी पर बरस पड़ीं।

DronStudy.com

SuccessCDs

लड़ाई का मोरचा बदल गया। दूसरी लड़ाई के दिन थे। इसलिए जब डॉक्टर भृगु नारायण नीले तेल वाले को यह पता चला कि टोपी ने कलेक्टर साहब के लड़के से दोस्ती गाँठ ली है तो वह अपना गुस्सा पी गए और तीसरे ही दिन कपड़े और शक्कर के परमिट ले आए।

DronStudy.com

SuccessCDs

परंतु उस दिन टोपी की बड़ी दुर्गति (बुरी हालत) बनी। सुभद्रादेवी तो उसी वक्त खाने की मेज़ से उठ गईं और रामदुलारी ने टोपी को फिर बहुत मारा।

''तैं फिर जय्यबे ओकरा घरे?''

''हाँ।''

''अरे तोहरा हाँ में लुकारा आगे माटी मिलऊ।''

DronStudy.com

SuccessCDs

...रामदुलारी मारते–मारते थक गई। परंतु टोपी ने यह नहीं कहा कि वह इफ़्फ़न के घर नहीं जाएगा। मुन्नी बाबू और भैरव उसकी कुटाई (पिटाई) का तमाशा देखते रहे।

DronStudy.com

SuccessCDs

"हम एक दिन एको रहीम कबाबची (कबाब बनाने वाला) की दुकान पर कबाबो खाते देखा रहा।" मुन्नी बाबू ने टुकड़ा लगाया।

कबाब!

DronStudy.com

SuccessCDs

"राम राम राम।" रामदुलारी घिन्ना के दो कदम पीछे हट गईं। टोपी मुन्नी की तरफ देखने लगा। क्योंकि असलियत यह थी कि टोपी ने मुन्नी बाबू को कबाब खाते देख लिया था और मुन्नी बाबू ने उसे एक इकन्नी रिश्वत की दी थी।

DronStudy.com

SuccessCDs

टोपी को यह मालूम था परंतु वह चुगलखोर नहीं था। उसने अब तक मुन्नी बाबू की कोई बात इफ़्फ़न के सिवा किसी और को नहीं बताई थी।

''तूँ हम्में कबाब खाते देखे रह्यो?''

''ना देखा रहा ओह दिन?'' मुन्नी बाबू ने कहा।

DronStudy.com

SuccessCDs

"तो तुमने उसी दिन क्यों नहीं बताया?" सुभद्रादेवी ने सवाल किया।

"इ झुट्ठा है दादी!" टोपी ने कहा।

उस दिन टोपी बहुत उदास रहा। वह अभी इतना बड़ा नहीं हुआ था कि झूठ और सच के किस्से में पड़ता—और सच्ची बात तो यह है कि वह इतना बड़ा कभी नहीं हो सका।

DronStudy.com SuccessCDs

उस दिन तो वह इतना पिट गया था कि उसका सारा बदन दुख रहा था। वह बस लगातार एक ही बात सोचता रहा कि अगर एक दिन के वास्ते वह मुन्नी बाबू से बड़ा हो जाता तो समझ लेता उनसे।

DronStudy.com

SuccessCDs

परन्तु मुन्नी बाबू से बड़ा हो जाना उसके बस में तो था नहीं। वह मुन्नी बाबू से छोटा पैदा हुआ था और उनसे छोटा ही रहा।

दूसरे दिन वह जब स्कूल में इफ़्फ़न से मिला तो उसने उसे सारी बातें बता दीं।

DronStudy.com SuccessCDs

दोनों जुगराफिया (भूगोल शास्त्र) का घंटा छोड़कर सरक गए। पंचम की दूकान से इफ़्फन ने केले खरीदे। बात यह है कि टोपी फल के अलावा और किसी चीज़ को हाथ नहीं लगाता था।

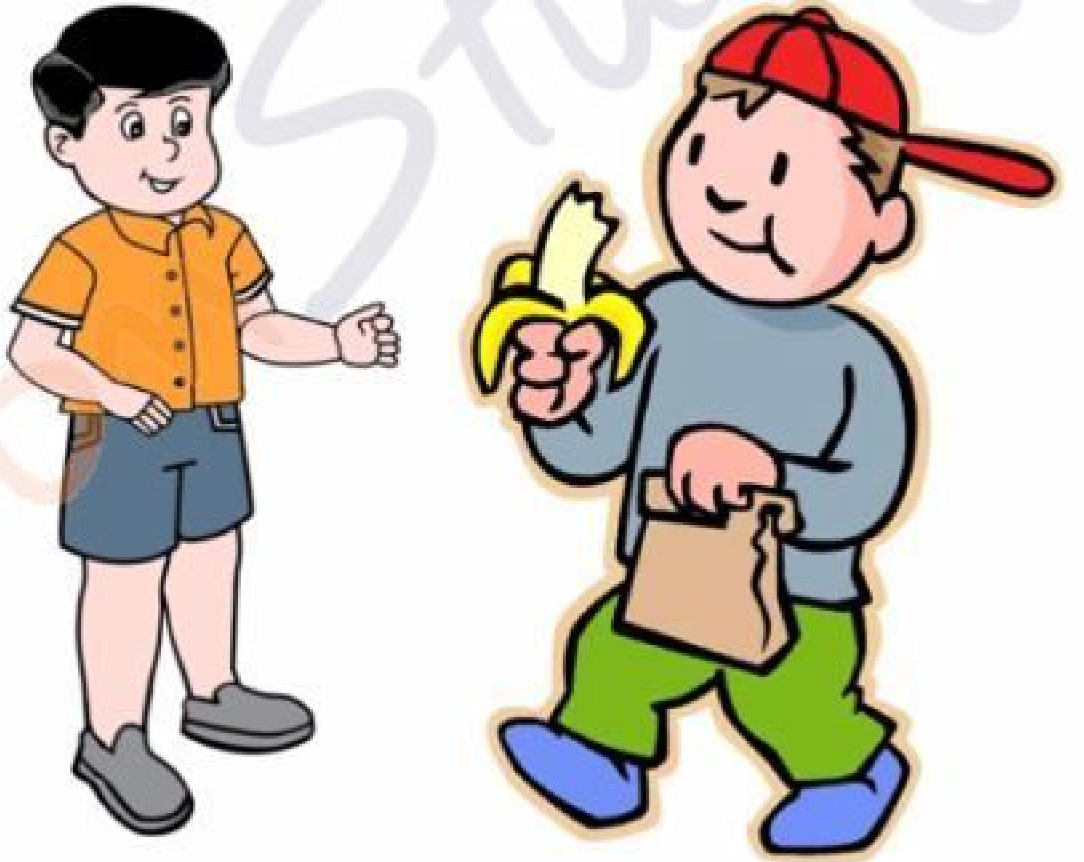

DronStudy.com

SuccessCDs

''अय्यसा (ऐसा न हो) ना हो सकता का की हम लोग दादी बदल लें,'' टोपी ने कहा। ''तोहरी दादी हमरे घर आ जाएँ अउर हमरी तोहरे घर चली जाएँ। हमरी दादी त बोलियो तूँहीं लोगन को बो–ल–थीं।''

''यह नहीं हो सकता।''

DronStudy.com

SuccessCDs

इफ़्फन ने कहा, ''अब्बू यह बात नहीं मानेंगे। और मुझे कहानी कौन सुनाएगा? तुम्हारी दादी को बारह बुर्ज की कहानी आती है?''

''तूँ हम्मे एक ठो दादियो ना दे सकत्यो?'' टोपी ने खुद अपने दिल के टूटने की आवाज़ सुनी।

''जो मेरी दादी हैं वह मेरे अब्बू की अम्माँ भी तो हैं।'' इफ़्फन ने कहा।

यह बात टोपी की समझ में आ गई।

DronStudy.com

SuccessCDs

''तुम्हारी दादी मेरी दादी की तरह बूढ़ी होंगी?''

''हाँ।''

''तो फिकर न करो।'' इफ़्फन ने कहा, ''मेरी दादी कहती हैं कि बूढ़े लोग मर जाते हैं।''

''हमरी दादी ना मरिहे।''

''मरेगी कैसे नहीं? क्या मेरी दादी झूठी हैं?''

DronStudy.com

SuccessCDs

ठीक उसी वक्त नौकर आया और पता चला कि इफ़्फन की दादी मर गई।

इफ़्फन चला गया। टोपी अकेला रह गया। वह मुँह लटकाए हुए जिमनेज़ियम में चला गया। बूढ़ा चपरासी एक तरफ बैठा बीड़ी पी रहा था। वह एक कोने में बैठकर रोने लगा।

DronStudy.com

SuccessCDs

शाम को वह इफ़्फन के घर गया तो वहाँ सन्नाटा था। घर भरा हुआ था। रोज़ जितने लोग हुआ करते थे उससे ज़्यादा ही लोग थे। परंतु एक दादी के न होने से टोपी के लिए घर खाली हो चुका था। जबकि उसे दादी का नाम तक नहीं मालूम था। उसने दादी के हज़ार कहने के बाद भी उनके हाथ की कोई चीज़ नहीं खाई थी।

DronStudy.com

SuccessCDs

प्रेम इन बातों का पाबंद नहीं होता। टोपी और दादी में एक ऐसा ही संबंध हो चुका था। इफ़्फन के दादा जीवित होते तो वह भी इस संबंध को बिलकुल उसी तरह न समझ पाते जैसे टोपी के घरवाले न समझ पाए थे। दोनों अलग–अलग अधूरे थे। एक ने दूसरे को पूरा कर दिया था।

DronStudy.com

SuccessCDs

दोनों प्यासे थे। एक ने दूसरे की प्यास बुझा दी थी। दोनों अपने घरों में अजनबी और भरे घर में अकेले थे। दोनों ने एक–दूसरे का अकेलापन मिटा दिया था। एक बहत्तर बरस की थी और दूसरा आठ साल का।

DronStudy.com
SuccessCDs

"तोरी दादी की जगह हमरी दादी मर गई होतीं त ठीक भया होता।" टोपी ने इफ़्फ़न को पुरसा (सांत्वना देना) दिया।

इफ़्फ़न ने कोई जवाब नहीं दिया। उसे इस बात का जवाब आता ही नहीं था। दोनों दोस्त चुपचाप रोने लगे।

DronStudy.com

SuccessCDs

भाग (3)

टोपी ने दस अक्तूबर सन् पैंतालीस को कसम खाई कि अब वह किसी ऐसे लड़के से दोस्ती नहीं करेगा जिसका बाप ऐसी नौकरी करता हो जिसमें बदली होती रहती है।

DronStudy.com

SuccessCDs

दस अक्तूबर सन् पैंतालीस का यूँ तो कोई महत्त्व नहीं परंतु टोपी के आत्म–इतिहास में इस तारीख का बहुत महत्त्व है, क्योंकि इसी तारीख को इफ़्फ़न के पिता बदली पर मुरादाबाद चले गए।

DronStudy.com

SuccessCDs

इफ़्फन की दादी के मरने के थोड़े ही दिनों बाद यह तबादला (बदली) हुआ था, इसलिए टोपी और अकेला हो गया क्योंकि दूसरे कलेक्टर (जिले का अधिकारी) ठाकुर हरिनाम सिंह के तीन लड़कों में से कोई उसका दोस्त न बन सका। डब्बू बहुत छोटा था।

DronStudy.com
SuccessCDs

बीलू बहुत बड़ा था। गुड्डू था तो बराबर का परंतु केवल अंग्रेज़ी बोलता था। और यह बात भी थी कि उन तीनों को इसका एहसास (अनुभूति) था कि वे कलेक्टर के बेटे हैं। किसी ने टोपी को मुँह नहीं लगाया।

DronStudy.com

SuccessCDs

माली और चपरासी टोपी को पहचानते थे। इसलिए वह बँगले में चला गया। बीलू, गुड्डू और डब्बू उस समय क्रिकेट खेल रहे थे। डब्बू ने हिट किया। गेंद सीधी टोपी के मुँह पर आई। उसने घबराकर हाथ उठाया। गेंद उसके हाथों में आ गई।

DronStudy.com

SuccessCDs

''हाउज़ दैट!''

हेड माली अंपायर था। उसने उँगली उठा दी। वह बेचारा केवल यह समझ सका कि जब 'हाउज दैट' का शोर हो तो उसे उँगली उठा देनी चाहिए।

DronStudy.com

SuccessCDs

''हू आर यू?'' डब्बू ने सवाल किया।

''बलभद्दर नरायन।'' टोपी ने जवाब दिया।

''हू इज़ योर फादर?'' यह सवाल गुड्डू ने किया।

DronStudy.com

SuccessCDs

''भृगु नरायण।''

''ऐं।'' बीलू ने अंपायर को आवाज़ दी, ''ई भिरगू नरायण कौन ऐ? एनी ऑफ अवर चपरासीज़?''

''नाहीं साहब।'' अंपायर ने कहा, ''सहर के मसहूर दागदर हैं।''

''यू मीन डॉक्टर?'' डब्बू ने सवाल किया।

DronStudy.com

SuccessCDs

''यस सर!'' हेड माली को इतनी अंग्रेज़ी आ गई थी।

''बट ही लुक्स सो क्लम्ज़ी (अनाड़ी)।'' बीलू बोला।

''ए!'' टोपी अकड़ गया। ''तनी जबनिया (जुबान) सँभाल के बोलो। एक लप्पड़ में नाचे लगिहो (एक थप्पड़ में नाचने लगोगे।)।''

DronStudy.com

SuccessCDs

''ओह यू...'' बीलू ने हाथ चला दिया। टोपी लुढ़क गया। फिर वह गालियाँ बकता हुआ उठा। परंतु हेड माली बीच में आ गया और डब्बू ने अपने अलसेशियन को शुशकार (कुत्ते को किसी के पीछे लगाने के लिए निकाली जाने वाली आवाज़) दिया।

DronStudy.com

SuccessCDs

पेट में सात सुइयाँ भुकीं तो टोपी के होश ठिकाने आए। और फिर उसने कलेक्टर साहब के बँगले का रूख नहीं किया। 'परंतु प्रश्न यह खड़ा हो गया कि फिर आखिर वह करे क्या? घर में ले–देकर बूढ़ी नौकरानी सीता थी जो उसका दुख–दर्द समझती थी।

DronStudy.com

SuccessCDs

तो वह उसी के पल्लू में चला गया और सीता की छाया में जाने के बाद उसकी आत्मा भी छोटी हो गई। सीता को घर के सभी छोटे–बड़े डाँट लिया करते थे। टोपी को भी घर के सभी छोटे–बड़े डाँट लिया करते थे। इसलिए दोनों एक–दूसरे से प्यार करने लगे।

DronStudy.com

SuccessCDs

''टेक मत किया करो बाबू!'' एक रात जब मुन्नी बाबू और भैरव का दाज (बराबरी) करने पर वह बहुत पिटा तो सीता ने उसे अपनी कोठरी में ले जाकर समझाना शुरू किया।

DronStudy.com

SuccessCDs

बात यह हुई कि जाड़ों के दिन थे। मुन्नी बाबू के लिए कोट का नया कपड़ा आया। भैरव के लिए भी नया कोट बना। टोपी को मुन्नी बाबू का कोट मिला। कोट बिलकुल नया था। मुन्नी बाबू को पसंद नहीं आया था। फिर भी बना तो था उन्हीं के लिए। था तो उतरन (पहले से प्रयोग की गई चीज़)।

DronStudy.com

SuccessCDs

टोपी ने वह कोट उसी वक्त दूसरी नौकरानी केतकी के बेटे को दे दिया। वह खुश हो गया। नौकरानी के बच्चे को दे दी जाने वाली चीज़ वापस तो ली नहीं जा सकती थी, इसलिए तय हुआ कि टोपी जाड़ा खाए।

DronStudy.com

SuccessCDs

''हम जाड़ा–ओड़ा ना खाएँगे। भात खाएँगे।'' टोपी ने कहा।

''तुम जूते खाओगे।'' सुभद्रादेवी बोलीं।

''आपको इहो ना मालूम की जूता खाया ना जात पहिना जात है।''

DronStudy.com

SuccessCDs

"दादी से बदतमीज़ी करते हो।" मुन्नी बाबू ने बिगड़कर कहा।

"त का हम इनकी पूजा करें।"

फिर क्या था! दादी ने आसमान सिर पर उठा लिया। रामदुलारी ने उसे पीटना शुरू किया...

DronStudy.com
SuccessCDs

''तूँ दसवाँ में पहुँच गइल बाड़।'' सीता ने कहा, ''तूँ हें दादी से टर्राव (ज़बान लड़ाना) के त ना न चाही। किनों ऊ तोहार दादी बाड़िन।''

DronStudy.com

SuccessCDs

सीता ने तो बड़ी आसानी से कह दिया कि वह दसवें में पहुँच गया है, परंतु यह बात इतनी आसान नहीं थी। दसवें में पहुँचने के लिए उसे बड़े पापड़ बेलने पड़े। दो साल तो वह फेल ही हुआ। नवें में तो वह सन् उनचास ही में पहुँच गया था, परंतु दसवें में वह सन् बावन में पहुँच सका।

DronStudy.com

SuccessCDs

जब वह पहली बार फेल हुआ तो मुन्नी बाबू इंटरमीडिएट में फर्स्ट आए और भैरव छठे में। सारे घर ने उसे ज़बान की नोक पर रख लिया (बार–बार बात कही)। वह बहुत रोया। बात यह नहीं थी कि वह गाउदी (भोंदू/बुद्धू) था।

DronStudy.com

SuccessCDs

वह काफी तेज़ था परंतु उसे कोई पढ़ने ही नहीं देता था। वह जब पढ़ने बैठता मुन्नी बाबू को कोई काम निकल आता या रामदुलारी को कोई ऐसी चीज़ मँगवानी पड़ जाती जो नौकरों से नहीं मँगवाई जा सकती थी–यह सब कुछ न होता तो पता चलता कि भैरव ने उसकी कापियों के हवाई जहाज़ उड़ा डाले हैं।

DronStudy.com

SuccessCDs

दूसरे साल उसे टाइफाइड हो गया।

तीसरे साल वह थर्ड डिवीज़न (तीसरा स्थान) में पास हो गया। यह थर्ड डिवीज़न कलंक के टीके की तरह उसके माथे से चिपक गया।

परंतु हमें उसकी मुश्किलों को भी मयान में रखना चाहिए।

DronStudy.com

SuccessCDs

सन् उनचास में वह अपने साथियों के साथ था। वह फेल हो गया। साथी आगे निकल गए। वह रह गया। सन् पचास में उसे उसी दर्जे में उन लड़कों के साथ बैठना पड़ा जो पिछले साल आठवें में थे।

DronStudy.com

SuccessCDs

पीछे वालों के साथ एक ही दर्जे में बैठना कोई आसान काम नहीं है। उसके दोस्त दसवें में थे।

वह उन्हीं से मिलता, उन्हीं के साथ खेलता। अपने साथ हो जाने वालों में से किसी के साथ उसकी दोस्ती न हो सकी। वह जब भी क्लास में बैठता उसे अपना बैठना अजीब लगता। उस पर सितम (जुल्म) यह हुआ कि कमज़ोर लड़कों को मास्टर जी समझाते तो उसकी मिसाल देते–

DronStudy.com SuccessCDs

‘‘क्या मतलब है साम अवतार (या मुहम्मद अली?) बलभद्र की तरह इसी दर्जे में टिके रहना चाहते हो क्या?’’

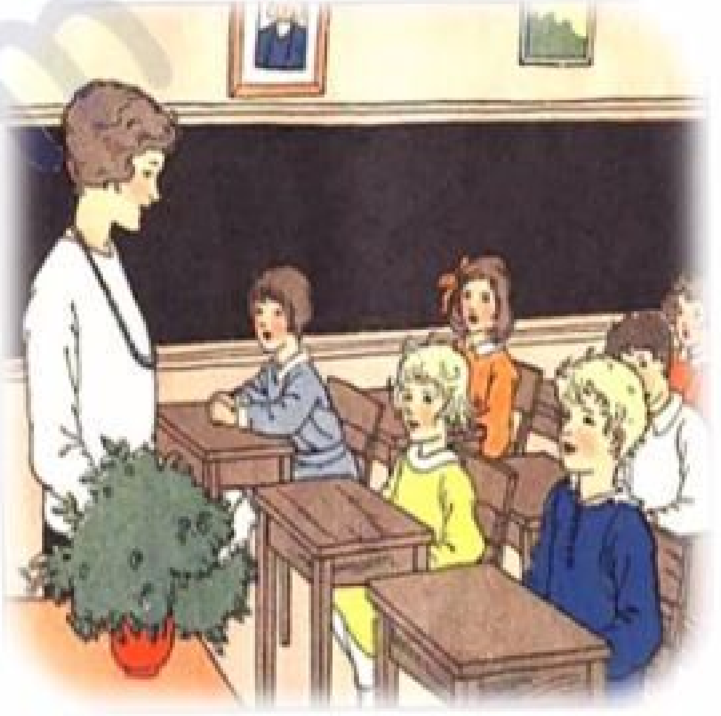

यह सुनकर सारा दर्जा (पूरी कक्षा) हँस पड़ता। हँसने वाले वे होते जो पिछले साल आठवें में थे। वह किसी–न–किसी तरह इस साल को झेल गया।

DronStudy.com

SuccessCDs

परंतु जब सन् इक्यावन में भी उसे नवें दर्जे में ही बैठना पड़ा तो वह बिलकुल गीली मिट्टी का लौंदा (गीली मिट्टी का पिंड) हो गया, क्योंकि अब तो दसवें में भी कोई उसका दोस्त नहीं रह गया था।

DronStudy.com

SuccessCDs

आठवें वाले दसवें में थे। सातवें वाले उसके साथ! उनके बीच में वह अच्छा–खासा बूढ़ा दिखाई देता था।

वह अपने भरे–पूरे घर ही की तरह अपने स्कूल में भी अकेला हो गया था। मास्टरों ने उसका नोटिस लेना बिलकुल ही छोड़ दिया था।

DronStudy.com

SuccessCDs

''तीन बरस से यही किताब पढ़ रहे हो, तुम्हें तो सारे जवाब ज़बानी याद हो गए होंगे! इन लड़कों को अगले साल हाई स्कूल का इम्तहान देना है। तुमसे पारसाल (अगले साल) पूछ लूँगा।''

टोपी इतना शर्माया कि उसके काले रंग पर लाली दौड़ गई। और जब तमाम बच्चे खिलखिलाकर हँस पड़े तो वह बिलकुल मर गया।

DronStudy.com

SuccessCDs

जब वह पहली बार नवें में आया था तो वह भी इन्हीं बच्चों की तरह बिलकुल बच्चा था।

DronStudy.com

SuccessCDs

फिर उसी दिन अबदुल वहीद ने रिसेज़ में वह तीर मारा कि टोपी बिलकुल बिलबिला उठा।

वहीद क्लास का सबसे तेज़ लड़का था। मॉनीटर भी था। और सबसे बड़ी बात यह है कि वह लाल तेल वाले डॉक्टर शुरफुद्दीन का बेटा था।

DronStudy.com

SuccessCDs

उसने कहा, "बलभद्दर! अबे तो हम लोगन (लोग) में का घुसता है। एड्थ वालन से दोस्ती कर। हम लोग तो निकल जाएँगे, बाकी तुहें त उन्हीं सभन के साथ रहे को हुइहै।"

यह बात टोपी के दिल के आर–पार हो गई और उसने कसम खाई कि टाइफाइड हो या टाइफाइड का बाप, उसे पास होना है।

परंतु बीच में चुनाव आ गए।

DronStudy.com

SuccessCDs

डॉक्टर भृगु नारायण नीले तेल वाले खड़े हो गए। अब जिस घर में कोई चुनाव के लिए खड़ा हो गया हो उसमें कोई पढ़–लिख कैसे सकता है!

वह तो जब डॉक्टर साहब की ज़मानत ज़ब्त हो गई तब घर में ज़रा सन्नाटा हुआ और टोपी ने देखा कि इम्तहान सिर पर खड़ा है।

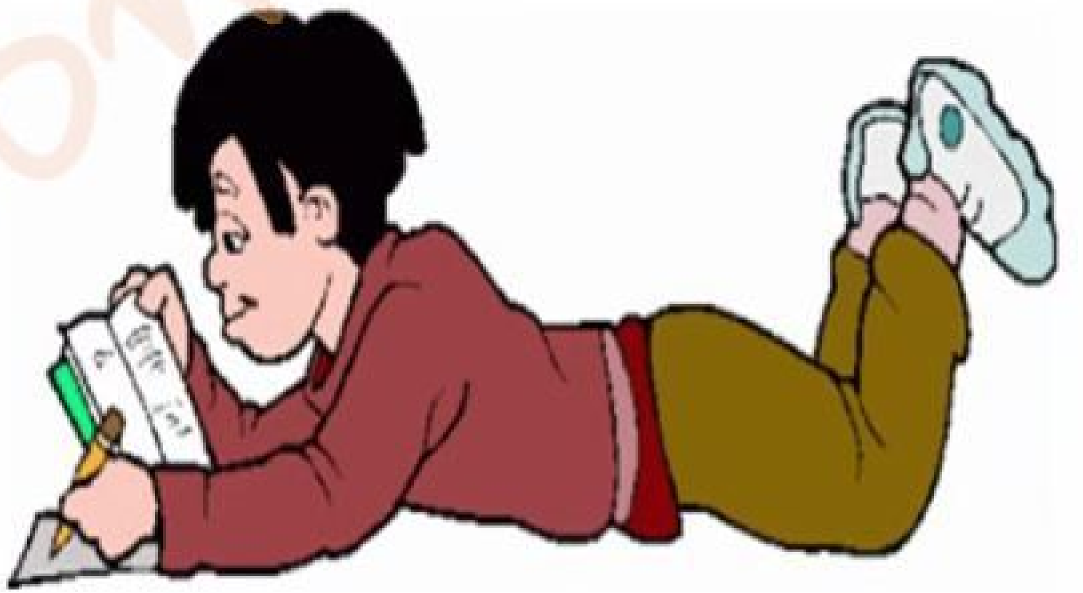

DronStudy.com

SuccessCDs

वह पढ़ाई में जुट गया। परंतु ऐसे वातावरण में क्या कोई पढ़ सकता था? इसलिए उसका पास ही हो जाना बहुत था।

“वाह!” दादी बोलीं, “भगवान नज़रे–बद (जो किसी स्थान पर निगरानी में रखा गया हो और जिसे निश्चित सीमा के बाहर जाने की आज्ञा न हो) से बचाए।

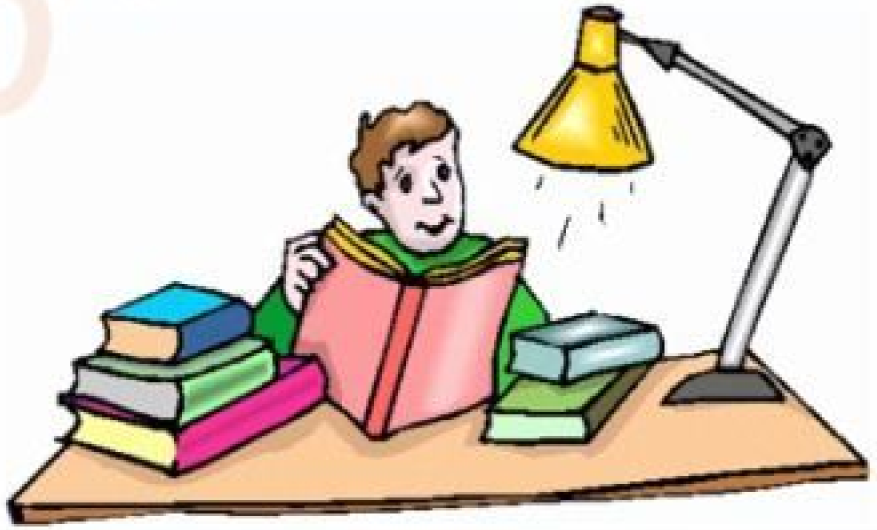

DronStudy.com

SuccessCDs

रफ़्तार अच्छी है। तीसरे बरस तीसरे दर्जे में पास तो हो गए।...''

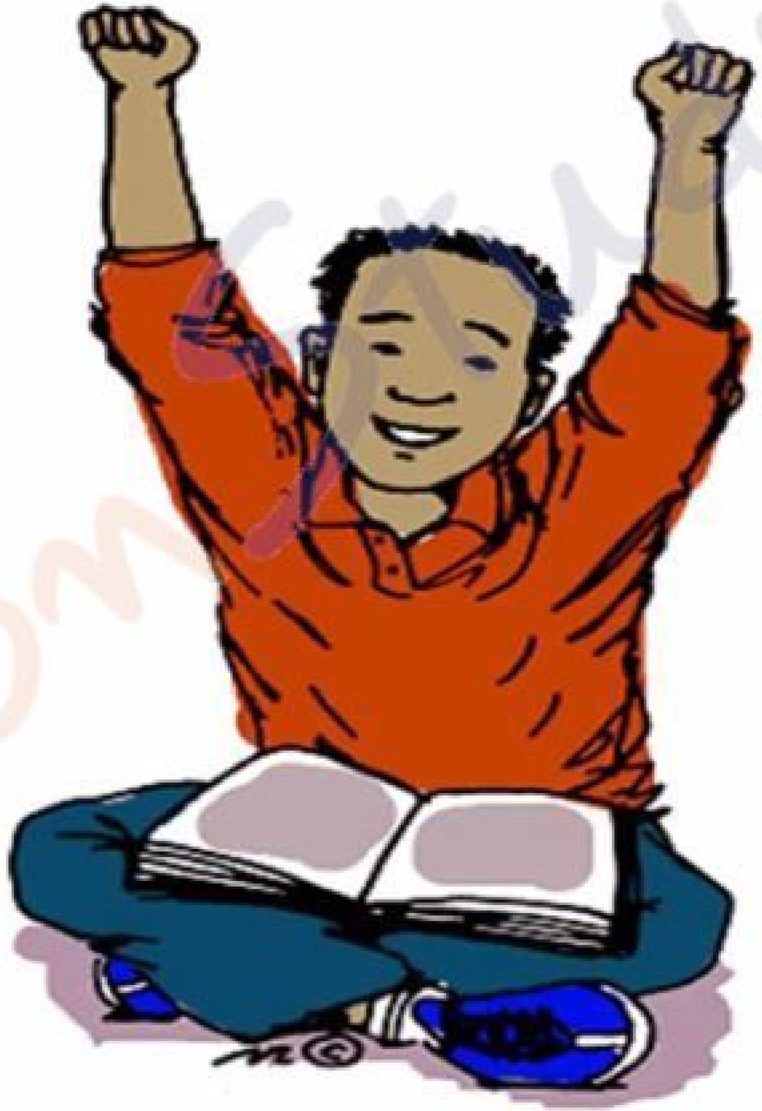

DronStudy.com

SuccessCDs

पाठ का सार

'टोपी शुक्ला' कहानी के लेखक 'राही मासूम रजा' है। इस कहानी के माध्यम से लेखक बचपन की बात करता है। बचपन में बच्चे को जहाँ से अपनापन और प्यार मिलता है वह वहीं रहना चाहता है।

DronStudy.com

SuccessCDs

टोपी का बचपन में अपनापन अपने परिवार की नौकरानी और अपने मित्र की दादी माँ से मिलता है। इफ़्फ़न टोपी का पहला मित्र था। टोपी उसे इफ़्फ़न कह कर बुलाता था। इफ़्फ़न को बुरा अवश्य लगता था परन्तु फिर भी वह उससे बात करता था।

DronStudy.com

SuccessCDs

दोनों एक–दूसरे के बिना अधूरे थे। दोनों के घरों की परंपराएं अलग–अलग थी लेकिन फिर भी इफ़्फ़न टोपी के जीवन का अटूट हिस्सा है। इफ़्फ़न की दादी मौलवी परिवार से नहीं थी। वह एक ज़मींदार परिवार की थी वह पूरब की रहने वाली थी।

DronStudy.com

SuccessCDs

इफ़्फ़न की दादी जब मरी तो उन्हें अपनी माँ का घर याद आने लगा। इफ़्फन को अपनी दादी से बहुत प्यार था। वह उसे रात के समय कहानियाँ सुनाया करती थी।

DronStudy.com

SuccessCDs

टोपी को भी उसकी दादी की भाषा अच्छी लगती थी। टोपी को इफ़्फन की दादी अपनी माँ जैसी लगती थी। उसे अपनी दादी से नफरत थी। वह इफ़्फन के घर जाकर उसकी दादी से बात करता था।

DronStudy.com

SuccessCDs

टोपी इफ़्फन से कहता है कि क्यों न वह अपनी दादी बदल लें। इफ़्फन ने कहा ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि उसकी दादी उसके पिता जी की माँ भी थी। इफ़्फन ने उसे दिलासा देते हुए कहा कि फिक्र मत करो उसकी दादी जल्दी मर जाएगी क्योंकि बूढ़े लोग जल्दी मर जाते हैं।

DronStudy.com

SuccessCDs

उसी दिन इफ़्फ़न की दादी मर जाती है। इफ़्फ़न के साथ टोपी को भी लगता है कि उसका सब कुछ चला गया है। दादी के बिना सारा घर खाली–खाली लगता है।

DronStudy.com

SuccessCDs

जल्दी ही इफ़्फन के पिता का तबादला हो गया। उस दिन टोपी ने कसम खाई कि आगे से किसी ऐसे लड़के से मित्रता नहीं करेगा जिसके पिता की नौकरी बदली वाली हो। इफ़्फन के जाने के बाद टोपी अकेला हो गया।

DronStudy.com

SuccessCDs

टोपी ने अपना अकेलापन घर की बूढ़ी नौकरानी सीता से दूर किया। सीता उसे बहुत प्यार करती थी। वह उसका दुःख दर्द समझती थी। घर के सभी सदस्य उसे बेकार समझते थे।

DronStudy.com

SuccessCDs

टोपी नवीं कक्षा में दो बार फेल हो गया था। जिस कारण उसे घर में और अधिक डांट पड़ने लगी थी। जिस समय वह पढ़ने बैठता था उसी समय घर के सदस्यों को बाहर से कुछ–न–कुछ मंगवाना होता था। स्कूल में भी उसे अध्यापकों ने सहयोग नहीं दिया।

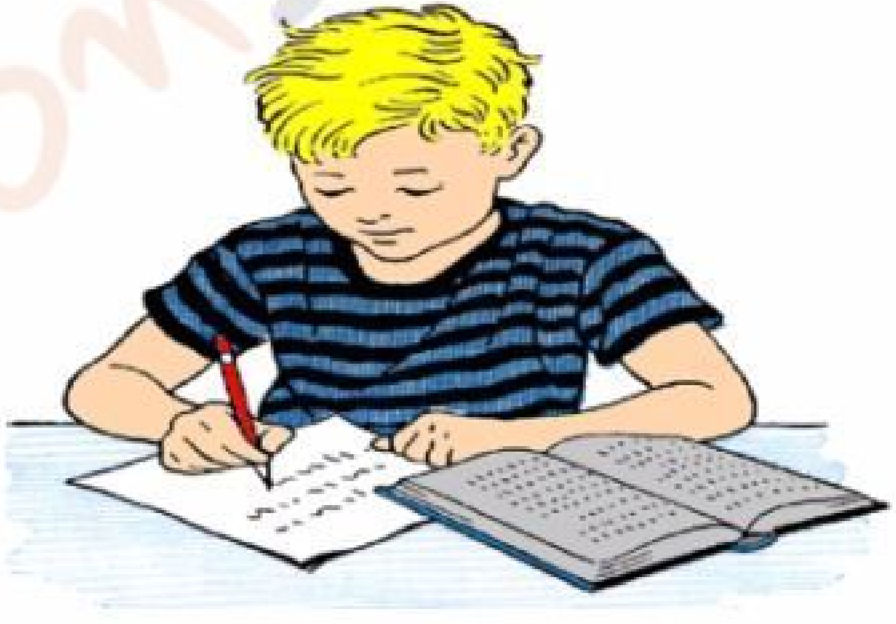

DronStudy.com

SuccessCDs

अध्यापकों ने उसके नवीं में तीन साल लगातार फेल होने पर कक्षा में नज़र अंदाज़ कर दिया था। कोई भी ऐसा नहीं था जो उसके साथ सहानुभूति रखता। उसे परीक्षा में पास होने के लिए प्रेरित करता।

DronStudy.com
SuccessCDs

उसने स्वंय ही मेहनत की और तीसरी श्रेणी में नवीं पास कर ली।

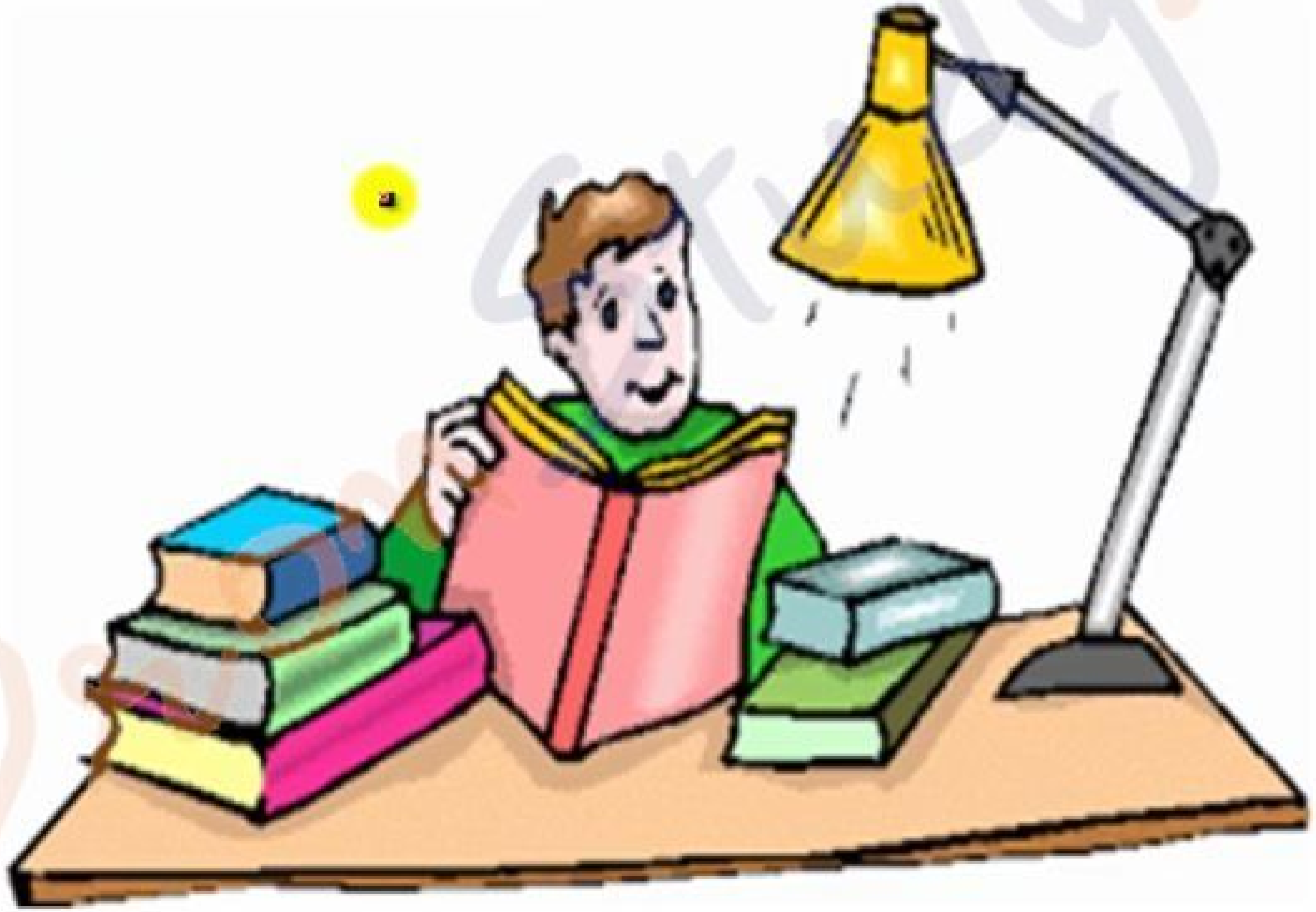

DronStudy.com

SuccessCDs

प्रश्नोत्तर

प्र॰1 टोपी ने इफ़्फ़न से दादी बदलने की बात क्यों कही?

उ॰– टोपी को अपनी दादी सुभद्रा देवी अच्छी नहीं लगती थी। वह उसे हर समय डाँटती रहती थी। टोपी को इफ़्फ़न की दादी अच्छी लगती थी। वह उसे पास बैठा कर प्यार करती थी और उसका हाल–चाल पूछती थी।

DronStudy.com SuccessCDs

इफ़्फ़न की दादी की बोली भी उनकी तरह थी। उसे इफ़्फ़न की दादी से बहुत अपनापन मिला था। वह उसे अच्छी तरह समझती थी इसलिए टोपी ने इफ़्फ़न से दादी की बात कही थी।

DronStudy.com

SuccessCDs

प्र॰2 जहीन होने के बावजूद भी कक्षा में दो बार फेल होने के क्या कारण थे?

उ॰– टोपी नवीं कक्षा में दो बार फेल हो गया था। टोपी पढ़ाई में बहुत ज़हीन था। परंतु उसे कोई पढ़ने नहीं देता था। जब भी वह पढ़ने बैठता था उसी समय घर में कोई–न–कोई काम निकल आता था। उस काम को केवल टोपी कर सकता था।

DronStudy.com

SuccessCDs

घर के नौकरों पर भरोसा नहीं किया जा सकता था। कभी मुन्नी बाबू तो कभी रामदुलारी उसे किसी–न–किसी काम के लिए पढ़ने से उठा देते थे। यदि घर वालों को कुछ काम नहीं होता तो भैरव ही उसकी कापियों के काग़ज़ों के हवाई जहाज उड़ा चुका होता। दूसरे साल उसने अच्छी तैयारी की थी। परंतु उसे टायफाइड हो गया था। इस कारण वह फेल हो गया।

DronStudy.com

SuccessCDs

प्र॰3 मरते समय इफ़्फ़न की दादी को अपने मायके का घर क्यों याद आ रहा था?

उ॰– लेखक के अनुसार मरते समय आदमी अपने जीवन के सबसे खूबसूरत सपने को देखता है। इफ़्फ़न की दादी को मरते समय अपने मायका का घर याद आने लगा था। वे हमेशा ससुराल में रहते हुए अपने मायके को याद करती रहती थी। वे एक ज़मींदार की बेटी थी।

DronStudy.com SuccessCDs

उनके घर पर दूध, दही और घी की कमी नहीं थी। जब भी वे अपने घर जाती थी खूब दूध, दही खाती थी। उन्होंने अपने घर में अपने हाथों में दसहरी आम का पेड़ लगाया हुआ था। अब वह पेड़ भी उनकी तरह बूढ़ा हो गया था। ऐसी ही कई मीठी यादें थीं जो उन्हें मरते समय याद आ रही थीं।

DronStudy.com

SuccessCDs

प्र.4 इफ़्फ़न और टोपी अलग–अलग धर्म से थे परंतु फिर भी एक थे। कैसे?

उ.– इफ़्फन और टोपी अलग–अलग धर्म को मानने वाले थे परंतु दोनों के दिल एक–दूसरे के लिए धड़कते थे। वे किसी भी धर्म को नहीं मानते थे। वे केवल प्यार को समझते थे। दोनों एक–दूसरे से सारी बात कर लेते थे। एक–दूसरे के बिना नहीं रहते थे। इसलिए दोनों एक थे।

DronStudy.com
SuccessCDs

प्र॰5 इफ़्फन टोपी शुक्ला की कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा किस तरह से है?

उ॰– इफ़्फन टोपी शुक्ला का सबसे पहला मित्र था। इफ़्फन से और उसकी दादी से टोपी शुक्ला को वह प्यार मिला था जो उसे कभी अपने घर से नहीं मिला था। इफ़्फन एक मुसलमान था परन्तु प्यार जाति–पाति नहीं देखता।

DronStudy.com

SuccessCDs

इफ़्फ़न के पास रहते हुए टोपी ने स्वयं को कभी अकेला नहीं समझा था इफ़्फ़न उसका दुःख–दर्द समझता था। इफ़्फ़न के पिता का तबादला होने पर इफ़्फ़न चला गया और वह बिलकुल अकेला पड़ गया। उसे कोई समझने वाला और दिलासा देने वाला नहीं रहा था। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि इफ़्फ़न टोपी शुक्ला की कहानी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है।

DronStudy.com SuccessCDs

एक नई कहानी के साथ हम फिर मिलेंगे।

धन्यवाद।

DronStudy.com

SuccessCDs